374/01/5/15 (23)

शोधार्थी — उपेन्द्र कुमार

शोध–निर्देशक — डॉ. विवेक दुबे

विभाग — हिन्दी

विषय — हिन्दी उपन्यासों में निहित सत्याग्रह की रचनात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन

शोध–सार

आधुनिक युग मानववादी विचारधाराओं का युग है। इस युग में मानववाद, विकासवाद, मार्क्सवाद, समाजवाद, मनोविश्लेषणवाद, पूंजीवाद, गांधीवाद– जैसी कई महत्वपूर्ण विचारधाराएँ आती हैं। आधुनिकयुगीन सभ्यता इन्हीं विचारधाराओं के संघर्ष एवं संघात से निर्मित होती है। यह स्वाभाविक है कि साहित्य रचना पर इन मानववादी विचारधाराओं का प्रभाव पड़ता है। इन विचारधाराओं में गांधीवादी विचारधारा का स्वरूप और भूमिका अलग ढंग की है। गांधीवाद सैद्धान्तिक पहलू पर उतना जोर न देकर व्यावहारिक पहलू पर जदा जोर देता है। गांधीवाद के अन्तर्गत पहली बार सिद्धान्त एवं व्यवहार के द्वैत को दूर करने की कोशिश की गई है। इसका अर्थ यह है कि गांधी उतनी ही सिद्धान्त को मान्यता देते हैं जितने पर मनुष्य आचरण कर सकता है। इसीलिए उन्होंने अपने को व्यावहारिक आदर्शवादी कहा है। गांधीवादी विचारधारा पूंजीवादी–साम्राज्यवादी विचारधारा के प्रतिरोध के रूप में सामने आती है । गांधीवाद के प्रतिरोध के लिए सत्याग्रह का आविष्कार गांधी ने 1906 में दक्षिण अफ्रीका में किया था। सत्याग्रह में मनुष्य अहिंसा और आत्मिक शक्ति के बल से शोषण और अत्याचार का प्रतिरोध करता है। इसमें यह माना जाता है कि अत्याचार करने वाले का हृदय परिवर्तन हो सकता है। इस तरह गांधीवाद आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण मानवादी विचारधारा है।

दक्षिण अफ्रीका में दो दशक से अधिक समय व्यतीत करने के पश्चात महात्मा गांधी भारत आते हैं और अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन जैसे बहुजन आधारित तरीकों से भारत की राजनीतिक और

सांस्कृतिक आजादी का संघर्ष चलाते हैं। उनके आन्दोलनों ने सर्वप्रथम भारतीय जनमानस को प्रभावित किया, तब उसका प्रभाव साहित्यकार के जीवन पर पड़ा, फिर इसके माध्यम से साहित्य पर भी परिलक्षित हुआ। चूंकि साहित्यकार भी समाज में रहने वाला प्राणी है और संभव नहीं है कि वह युगीन विचारधाराओं से परे रह सके। वह प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार से प्रभावित होता है। जब कोई आन्दोलन एक सामयिक आवेश–प्रवाह न रहकर स्थिर भाव व विचार–भूमि का रूप धारण कर लेता है, तब उसका प्रभाव रचनाकार की अंतश्चेतना तक अवश्य पहुंचता है, उसके पश्चात ही वह कलात्मक व रचनात्मक अभिव्यक्ति देने में सफल हो पाता है। 'सत्याग्रह' एक ऐसा ही जन–आन्दोलन है जिससे प्रभावित होकर रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में इसकी कलात्मक या रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। कई लेखकों ने सत्याग्रह आन्दोलन में भागीदारी भी की है जिसके फलस्वरूप उनके साहित्य में प्रमाणिकता की गहराई मिलती है। गांधीवाद विशेषकर सत्याग्रह की अवधारणा का प्रभाव, स्वतंत्रता–पूर्व एवं पश्चात के ज्यादतर लेखकों पर पड़ा है। जिन लेखकों ने सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलन का चित्रण किया है, वहाँ भी बहस के रूप में गांधीवाद और उसकी केन्द्रीय अवधारणा सत्याग्रह का प्रभाव लक्षित होता है। उपन्यास सामाजिक–राजनीतिक यथार्थ को ज्यादा प्रभावी एवं पारदर्शी रूप में चित्रित करने वाली विधा है। लिहाजा उपन्यासों में गांधीवादी सत्याग्रह आन्दोलन और उनकी विचारधारा का बड़े पैमाने पर चित्रण हुआ है।